Sub - Philosophy B.A. I (Hons) Paper. Ist

Topic - Charvaka Epistemology

1

Question - चार्वाक के ज्ञानशास्त्रीय (Epistemology) सिद्धान्त को स्पष्ट करें।

Or. चार्वाक के ज्ञानमीमांसा की समीक्षात्मक व्याख्या करें।

Or चार्वाक क्यों एक मात्र प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है? स्पष्ट करें।

Or. चार्वाक किस प्रकार अनुमान, शब्द, उपमान आदि प्रमाणों का खण्डन करता है? स्पष्ट करें।

Ans - चार्वाक के ज्ञानमीमांसा पर ही उसके तत्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र निर्भर है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा कहते हैं और यथार्थ ज्ञान के साधन को प्रमाण कहते हैं। चार्वाक दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष ही एक मात्र ज्ञान के प्रमाण है। इन्द्रिय और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है। रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द यह पाँच इन्द्रिय प्रत्यक्ष है। सुख दुःख आदि का अनुभव भी इस पाँच इन्द्रिय प्रत्यक्ष पर निर्भर है। चार्वाक केवल प्रत्यक्ष ज्ञान को ही निर्विवाद तथा संशयरहित मानते है। ऐसे ज्ञान को प्रमाणित करने के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है। कहा जाता है कि "प्रत्यक्षं हि प्रमाणम।" चूँकि चार्वाक इन्द्रिय ज्ञान (प्रत्यक्ष) को ही एक मात्र यथार्थ ज्ञान मानते हैं। इसलिए अनुमान और शब्द जैसे प्रमाणों का खण्डन करते हैं। चार्वाक के अतिरिक्त ऐसा कोई दर्शन नहीं है, जिसने

Scanned with CamScanner

अनुमान को प्रमाण नहीं माना है।

चार्वाक दर्शन अनुमान की प्रामाणिकता का खण्डन करता है प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर किसी अप्रत्यक्ष का अनुमान करना ही अनुमान प्रमाण है। पर्वत पर धुआँ के आधार पर अप्रत्यक्ष अग्नि का अनुमान करना ही अनुमान है, ये सम्बन्ध व्याप्ति पर आधारित है। 'व्याप्ति' का अर्थ "दो वस्तुओं में आवश्यक एवं अनिवार्य सम्बन्ध (जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ अग्नि अवश्य है)" व्याप्ति स्वयं कार्य-कारण सम्बन्ध पर आधारित है (अग्नि कारण है और धुआँ कार्य है)

चार्वाक ने अनुमान के खण्डन कई तर्क के आधार पर किया है। चार्वाक ने सामान्यानुमान, विशेषानुमान, व्याप्ति-नियम और कार्य-कारण नियम सबका खण्डन किया है। ज्ञान से अज्ञान की ओर छलांग लगाना है। चार्वाक का विचार है कि व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष से संभव नहीं है। व्याप्ति को अनुमान का प्रमाण माना जाता है जैसे - जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ आग है अतः पहाड़ पर धुआँ है, अतः पहाड़ पर आग है। इस अनुमान का आधार धुआँ और आग के बीच व्याप्ति सम्बन्ध है। चार्वाक का कहना है कि प्रत्यक्ष से व्याप्ति वाक्य की स्थापना संभव नहीं, क्योंकि सभी देश तथा काल के धूमवान पदार्थों का निरीक्षण

Scanned with CamScanner

संभव नहीं है। इसलिए कुछ स्थानों पर धुआँ के साथ आग को देखकर यह नहीं कहा जा सकता है कि सभी धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त होते हैं।

चार्वाक का विचार है कि व्याप्ति की स्थापना कारण-कार्य से भी असिद्ध है। पाश्चात्य आधुनिक अनुभववादी Hume की तरह चार्वाक कारण कार्य सिद्धान्त को अप्रमाणिक मानते हैं। इनके अनुसार कारण-कार्य संबंध भी एक व्याप्ति है। दो चीजों को साथ-साथ देखकर उनके बीच कारण-कार्य सम्बन्ध नहीं माना जाना चाहिए। कारण-कार्य के बीच अनिवार्य सम्बन्ध नहीं कालिक साहचर्य सम्बन्ध है। अतः प्रत्यक्ष से कार्य-कारणभाव की सिद्धि नहीं होती। अतः व्याप्ति असिद्ध है।

चार्वाक की दृष्टि में शब्द प्रमाण भी अमान्य है शब्द प्रमाण उसे कहते हैं, जो किसी आप्त पुरुष के वचन को, जिनके शब्द पर विश्वास किया जाता है या जिनका कथन/वचन विश्वास योग्य हो। हमारे ज्ञान का बहुत बड़ा अंश शब्द प्रमाण पर आधारित है। लेकिन अनुमान की तरह चार्वाक शब्द प्रमाण की विश्वसनीयता पर संदेह प्रकट करते हैं

Scanned with CamScanner

चार्वाक का मत है कि अप्रत्यक्ष वस्तुओं के सम्बन्ध में शब्द अप्रमाणिक है। यदि आप्त पुरुष सिद्ध पदार्थों का वर्णन करते हैं, तो यह वर्णन प्रत्यक्ष प्रमाण के अन्तर्गत आ जाता है। यदि वे अदृष्ट, अज्ञात पदार्थों का वर्णन करें तो वह कल्पना मात्र है, प्रमाणिक नहीं है ईश्वर, स्वर्ग-नरक जैसे अप्रत्यक्ष वस्तुओं के सम्बन्ध में ज्ञान देने के फलस्वरूप शब्द प्रमाण मिथ्या ज्ञान देता है।

चार्वाक वेदों का प्रमाण नहीं मानता वैदिक यज्ञ आदि कर्मों में उनका विश्वास नहीं है। इन कर्मों को वह धूर्त ब्राह्मणों द्वारा अपने जीविकोपार्जन का साधन मानता है। चार्वाक ने वेद रचयिता को धूर्त कहा है। अतः वैदिक शब्द अयथार्थ अस्पष्ट तथा असंगत है।

<u>आलोचना (Criticism)</u> - चार्वाक के द्वारा अनुमान खण्डन का अन्य भारतीय दार्शनिकों ~~के द्वारा~~ ने ~~प्रबल~~ प्रबल खण्डन किया है। प्रत्यक्ष प्रमाण को एक मात्र यथार्थ ज्ञान के साधन मानना अव्यवहारिक तथा गलत है। व्यावहारिक तथा दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान का सहारा लिया जाता है।

आकाश में घने मेघ को देखकर वर्षा होने का अनुमान किया जाता है। जल पीने के बाद अनुमान किया जाता है कि प्यास बुझेगी। अतः अनुमान को प्रमाणिक न मानने से जीवन असंभव हो जायेगा।

आलोचकों का पुनः विचार है कि प्रत्यक्ष हमेशा संशय रहित एवं निश्चित नहीं होता जैसा कि चार्वाक ने माना है। हमारा अनुभव है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है जबकि वास्तविकता तो यह है कि पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है। अतः प्रत्यक्ष ज्ञान में भी भ्रम होता है। प्रत्यक्ष सदा यथार्थ ज्ञान देने में असमर्थ है।

आलोचकों का मत है कि बुद्धि द्वारा अनुमान का खण्डन नहीं हो सकता। समस्त बुद्धि-विकल्प कार्यकारण भाव आदि नियमों पर आश्रित है, जिसकी सार्वभौमिकता निश्चितता और अनिवार्यता निर्विकल्प स्वतः सिद्ध है। बुद्धि विकल्पों के बिना किसी प्रकार का खण्डन या मण्डन में किसी प्रकार का बुद्धि व्यवहार संभव नहीं होता। बुद्धि विकल्पों के बिना इन्द्रिय प्रत्यक्ष भी ज्ञान के रूप में परिणत नहीं हो सकता। अतः अनुमान के बिना चार्वाक न तो अपने मत का प्रतिपादन कर सकता है और न पर मत का खण्डन कर सकता है यह स्व विरोधी वदतो-

Scanned with CamScanner

व्याघात है।

आलोचकों की असहमति है कि शब्द तथा बौद्धिक वाक्य संदेहपूर्ण नहीं माने जा सकते हैं। ऐसा मानने से हमारा ज्ञान सीमित तथा संकीर्ण हो जायेगा वेद को अप्रमाणिक मानना हास्यास्पद है।

निष्कर्ष :— यह सही है कि चार्वाक के ज्ञानमीमांसा की बहु आलोचनाएँ हुई हैं, फिर भी इसका महत्व है। जिस प्रकार Kant को Hume का संशयवाद, अन्धविश्वास की निद्रा से जगाया था, उसी प्रकार भारतीय दर्शन को चार्वाक ने अंधविश्वास तथा हठवाद से बचाया है। चार्वाक का कहना है कि अनुमान से निश्चित ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, सही मानी जा सकती है, क्योंकि पाश्चात्य देशों के Pragmatist तथा Logical Positivist और अनेक सम्प्रदायों के विद्वानों का कुछ ऐसा ही मत है। लेकिन फिर भी कहा जा सकता है कि चार्वाक के प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा का तार्किक परिणाम अनुमान शब्द आदि का खण्डन है जिसमें तर्कत: सफल नहीं हो पाए हैं।

Dr Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon
V.K.S.U. Ara

Scanned with CamScanner